आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

# मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2655 • उदयपुर, शनिवार 02 अप्रैल, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

## आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

## डोली में बैठ चली साजन के घर 21 बेटियाँ

### लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ ने नवयुगलों को दिया आशीर्वाद

नारायण सेवा संस्थान के 37 वें निःशुल्क दिव्यांग एवं निर्धन युवती–युवती सामूहिक विवाह समारोह के दूसरे दिन 6 मार्च को लियों का गुड़ा स्थित संस्थान के सेवामहातीर्थ में 21 जोड़ों ने पवित्र अग्नि को साक्षी बनाकर फेरे लिए। मुख्य अतिथि पूर्व राज परिवार के सदस्य लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ थे। संस्थान संस्थापक श्रद्धेय कैलाश जी मानव, कमला देवी जी अग्रवाल, अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल, वंदना जी अग्रवाल व विशिष्ट अतिथियों श्री संजय भाई दया–दक्षिणी अफ्रीका, श्री सोहनलाल–मुक्ता चड्ढा व श्री भरत सोलंकी–यू.एस.ए. द्वारा गणपति पूजन के साथ विवाह की पारम्परिक विधियां आरम्भ हुई। मुख्य अतिथि लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ ने कहा के सेवा भाव से किया गया कार्य हमेशा खुशी देता है। यह भारतीय समाज की शुरू से विशेषता भी रही है। मेवाड़ तो हमेशा ही इस दिशा में आदर्श रहा है। उन्होंने कहा कि मेवाड़ इतिहास, संस्कृति और पर्यटन की वजह से तो दुनियाभर में पहचान रखता ही है, नारायण सेवा ने इस पहचान को और व्यापकता दी है। पूज्य कैलाश जी 'मानव' ने कहा कि, जिन दिव्यांग भाई–बहनों ने निःशक्ता को दुर्भाग्य मानते हुए अपनी गृहस्थी बसने की कभी कल्पना भी न की होगी, आज समाज के सहयोग से उनकी यह साध पूरी हो रही है। प्रशान्त जी भैया ने कहा कि सपने देखना किसे अच्छा नहीं लगता और जब कोई अकल्पनीय सपना साकार हो उठता है तो उसकी खुशी को बंया करना भी आसान नहीं होता।

### वैदिक विधि से पाणिग्रहण

भैया ने कहा कि ऐसे ही पलों को समेटे सेवामहातीर्थ के विशाल प्रांगण में 21 दिव्यांग जोड़ों ने जिन्दगी की नई शुरूआत की है। ये जोड़े राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, उत्तरप्रदेश सहित विभिन्न राज्यों के है। पिछले 36 विवाहों में 2130 जोड़े अपना घर–संसार बसाकर खुश हैं। इन जोड़ों में कोई पांव से तो कोई हाथ से दिव्यांग है। किसी जोड़े में एक विकलांग है तो साथह सकलांग हैं। ऐसा जोड़ा भी है जो नेत्रहीन है। मेहन्दी रस्स के दौरान विभिन्न राज्यों से आई महिला अतिथियों ने ढोलक की थाप पर मेहंदी के परम्परागत गीत–नृत्यों की मनोहारी प्रस्तुतियां दी। वंदना जी व पलक जी की टीम ने जब स्नेह से दुल्हनों के हाथों में मेहंदी लगाई तो दुल्हनों के लिए वे एक वे पल अविस्मरणीय हो गए। विवाह समारोह के दौरात प्रातः दूल्हा–दुल्हन की बिन्दोली निकाली गई। जिसमें बैण्ड बाजों की धुन पर विभिन्न प्रान्तों से आए अतिथियों ने जमकर ठुमके लगाए। बाद में सभी दूल्हों ने क्रम से तोरण की रस्म अदा की। इसके बाद हाइड्रोलिक स्टेज पर गुलाब पंखुरियों की बौछार के बीच नव युगलों ने परस्पर वरमाला पहनाई। इसके पछचात 21 वेदी–कुण्डों पर उपस्थित आचार्यों ने वैदिक विधि से पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न करवाया। विदाई की वेला में दूल्हनें डोली में बेठकर साजन के घर जाने के लिए संस्थान परिसर से बाहर आई जहा दूल्हें व उनके परिवार तथा अन्य अतिथि मौजूद थे। इस दौरान सभी की आंखे नम हो उठी। संस्थान के वाहनों में गृहस्थी के सामान व अतिथियों द्वारा प्रदत्त उपहारों के साथ नव दम्पती को खुशी–खुशी अपने घरों के लिये विदा किया गया। समारोह का संस्कार चैनल से सीधा प्रसारण किया गया। मंच संचालन महिम जी जैन ने किया।

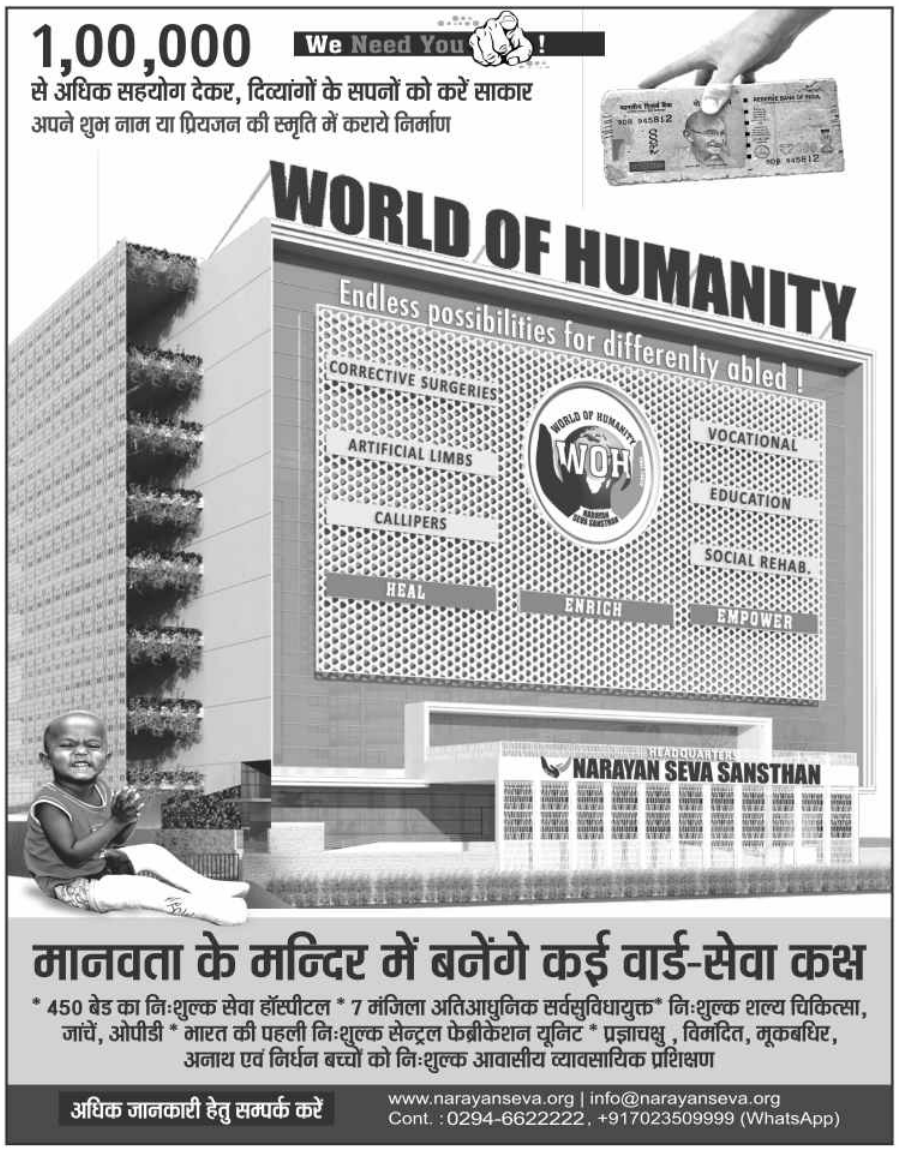

## महीनों से न नहाएं न नाखून काटे

गिर्वा तहसील के आदिवासी बहुल अलसीगढ़ पंचायत के कांकरफला गांव में 7 फरवरी को नारायण सेवा संस्थान ने अपनी सामाजिक गतिविधियों के तहत अन्नदान, वस्त्रदान, शिक्षा एवं चिकित्सा सहायता शिविर आयोजित कर 40 बच्चों को जरूरत के मुताबिक गणवेश, जूते, साबुन, तेल, टूथपेस्ट–ब्रश और परिवार को राशन सामग्री की मदद देकर स्कूली शिक्षा से जोड़ा। संस्थान ने ग्रामीणों और बच्चों को साफ–सफाई व स्वच्छता की सीख देते हुए डॉ. हर्ष पण्ड्या के माध्यम से 150 बीमारों का स्वास्थ्य परीक्षण कर

एलर्जी, एनीमिया, खांसी व मौसमी बीमारियों की दवाईयां दी। इस दौरान प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी जीवनलाल जी मेघवाल, सरपंच पुश्कर जी मीणा, प्रधानाध्यापक निर्मल जी कोठारी एवं संस्थान के भगवान प्रसाद जी गौड़, दल्लाराम जी पटेल, जसबीर सिंह जी व दिलीप सिंह जी सहित 30 सदस्यीय टीम ने सेवाएं दी।

सहायता सामग्री वितरण– संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी भैया के नेतृत्व में 540 आदिवासी स्त्री–पुरूषों को 15 क्विंटल मक्का, 300 लुगड़ीयां, 200 जोड़ी चप्पल, 150 धोतियां वितरित की गई। वहीं शिविर में आये करीब 350 बच्चों को मंजन करवाते हुए साबुन टूथपेस्ट–ब्रश भेंट किए। नाखून–बाल कटिंग कर नहलाया, नये कपड़ें और जूते पहनाए तथा 2 अति निर्धन एवं नेत्रहीन परिवारों को मासिक राशन व सहायक उपकरण भी दिये।

## दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

| ऑपरेशन संख्या | सहयोग राशि | ऑपरेशन संख्या | सहयोग राशि |
|---|---|---|---|
| 501 ऑपरेशन के लिए | 17,00,000 | 40 ऑपरेशन के लिए | 1,51,000 |
| 401 ऑपरेशन के लिए | 14,01,000 | 13 ऑपरेशन के लिए | 52,500 |
| 301 ऑपरेशन के लिए | 10,51,000 | 5 ऑपरेशन के लिए | 21,000 |
| 201 ऑपरेशन के लिए | 07,11,000 | 3 ऑपरेशन के लिए | 13,000 |
| 101 ऑपरेशन के लिए | 03,61,000 | 1 ऑपरेशन के लिए | 5000 |

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

### आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

( वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें )

| | |
|---|---|
| नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि | 37000/- |
| दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि | 30000/- |
| एक समय के भोजन की सहयोग राशि | 15000/- |
| नाश्ता सहयोग राशि | 7000/- |

### दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

| वस्तु | सहयोग राशि (एक नग) | सहयोग राशि (तीन नग) | सहयोग राशि (पाँच नग) | सहयोग राशि (ग्यारह नग) |
|---|---|---|---|---|
| तिपहिया साईकिल | 5000 | 15,000 | 25,000 | 55,000 |
| व्हील चेयर | 4000 | 12,000 | 20,000 | 44,000 |
| केलीपर | 2000 | 6,000 | 10,000 | 22,000 |
| वैशाखी | 500 | 1,500 | 2,500 | 5,500 |
| कृत्रिम हाथ/पैर | 5100 | 15,300 | 25,500 | 56,100 |

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

### मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

| | |
|---|---|
| 1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500 | 3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500 |
| 5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500 | 10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000 |
| 20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000 | 30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000 |

## प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

आपणो पहलो सुख निरोगी काया वेई भाया तो मन में रामचरितमान्स रे प्रति प्रेम वेई। प्रेम भूर्पणखा रे प्रति नी है, प्रेम सीतामाता रे प्रति है। श्री, जिनके पहले श्रीसीतामाता लगता है। श्री में लक्ष्मीजी आई ग्या, श्री में पार्वतीजी आई ग्या, श्री में सरस्वतीजी आई ग्या। श्री में सब आई ग्या। ऐसे श्रीसीताजी। और खर–दूषण, दौड़ो रे, मार डालो रे, राम–सीता को पकड़ लो। सीता का हरण कर के ले आओ। और दौड़–दौड़ जाई रिया रे जतरे खर–दूषण ने थोड़ी समझ आईगी। अरे रूको रूको, रूक गया सा। देखो भाई, ये राजकुमार को मैंने दूर से देखा है, मेरा भी मन मोहित हो गया है। मैंने नाग देखे, गन्धर्व देखे, इन्सान देखे, अपने जैसे राक्षस देखे। मैंने रावणजी को भी देखा, मैंने सब को देखा, लेकिन इनके जैसा सुन्दर राजकुमार! राक्षसों रा मन ढ़ब ग्यो सा। इनके जैसे सुन्दर राजकुमार तो कहीं नहीं देखे। असी करो अटी आओ, म्हारा दूत अटी आओ। ऐ कुलदागी, ऐ कुलदागी इधर आ। होकम, होकम खर–दूषण। खर, जो खराब वे जो, खर और दूषण रो मतलब जो सभी अवगुणों रा भण्डार वेवे वने दूषण बोले। कोई नाम ही नी राखे खर–दूषण, त्रिशरा, मारीच नाम नी राखे। कई करनो नाम राख न ? आपणे तो पहाड़ी से ऊपर वाला बच्चा अच्छा जो गायत्री मंत्र बोल रियो–

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सतिुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि,
धियो यो नः प्रचोदयात।।

और पद रो अर्थ भी वताई रियो है। त्रिपदा गायत्री माता हे गायत्री माता, हे परमात्मा आप मेरे पूरे भारीर में, हृदय कमल में और सहस्त्रार चक्र रूपी में मस्तिष्क में बिराज रहे हो। आज मैं तो पुस्तक पढ़ रियो थो ऍनोटामी और फिजियोलॉजी। उसमें भारीर के अन्दर जो जो हड्डियाँ होती है, उसका एक पूरा सब्जेक्ट अलग दिया है, ब्रेन ह्ड्डी। तो, बताओ भारीर में कितनी हड्डियाँ है सा ? 206 हड्डियाँ वे। तो आपणे भारीर ने आपी नी जाणांगा तो कूण जाणेगा भाई ? और क्यूं नी जांणनो आपणे ? इमे जो हड्डियाँ वे वीको एक पूरो विभाग है, और पचास पेज ऍनोटामी एण्ड फिजियोलॉजी। ऍनोटामी भारीर रचना विज्ञान और फिजियोलॉजी भारीर क्रिया विज्ञान में है।

## प्रेम की बात

मेरा नाम प्रेम लाल है मेरी उम्र 14 साल है मैं जिला खरगोन मध्यप्रदेश का निवासी हूँ। मैं पोलियो से ग्रसित था और चल नहीं पा रहा था मेरे पिता जी ने मुझे कई जगह पर दिखाया पर कहीं से भी सन्तोषपूर्ण जवाब नहीं मिला। मेरे मामाजी की लड़की भी पोलियो से विकलांग थी।

उन्होंने नारायण सेवा संस्थान में ऑपरेशन करवाया और ठीक हो गई। तब मामाजी ने कहा कि तुम भी उदयपुर जाओ और अपने पैर का ऑपरेशन करवा लो वहाँ पर निःशुल्क चिकित्सा व भोजन की सुविधा है।

इस संस्थान में आये और मेरे पैर का निःशुल्क सफल ऑपरेशन हुआ। मैं इस संस्थान का जीवन भर आभारी रहूँगा क्योंकि इस संस्थान ने मुझे दिव्यांगता से मुक्ति दिलाई।

## सम्पादकीय

ईश्वर की आराधना के अनेकानेक स्वरूप प्रचलन में है। इनमें एक है जरूरतमंदों की उपयुक्त सेवा । सेवा शब्द यों तो इतना व्यापक है कि प्रत्येक क्रियाकलाप को इसके अंतर्गत परिभाषित किया जा सकता है। परन्तु सेवा का एक प्रभावी रूप है किसी भी जरूरतमंद की सहायता जो उसे तत्काल आवश्यक है।

आज अनेक व्यक्ति अज्ञान पीड़ित हैं, कई लोग रोजगार विहीन हैं, कई स्वास्थ्य से पीड़ित हैं तो कई अन्य परिस्थितियों से। इनमें भी जो रोग से, दिव्यांगता से, निर्धनता से पीड़ित हैं उनको तो तुरंत सहयोग चाहिए ही। इस प्रकार के सहयोग के लिए वर्तमान में अनेक संस्थान, अनेक संगठन व अनेक व्यक्ति सेवारत हैं। यह सही है कि पीड़ितों की तुलना में सेवा करने वालों की संख्या अत्यधिक न्यून है, पर बहुत कुछ हो रहा है। इस प्रकार के सेवा कार्यों में प्रमुखतः संसाधनों का भी प्रमुख सहयोग होता है। लेकिन साधनों से भी ज्यादा महत्व है– सेवा के लिए अंतरमन से उठे भावों का। हर एक व्यक्ति के मन में यदि सेवा की भावना जग जाए तो संसाधन तो स्वतः जुटने लगते है। प्राथमिक कार्य है सेवा के विचारों का प्रसारण। जरूरी है सेवा के बीजों का रोपण। यह कार्य किसी वैचारिक अभियान से ही संभव है ।

## कुछ काव्यमय

**सत्य, दया, करुणा नहीं, उपजी मन के द्वार।**
**वो मानव की देह में, इस धरती पर भार।।**
**मानव जीवन है सफल, परहित आये काम।**
**बाकी तो ढल जायगी, इस जीवन की शाम।।**
**जो ईश्वर आदेश का, पालन करना चाह।**
**तो विचलित हो मन भला, सुने किसी की आह।।**
**जब भी मन में उपजता, पीड़हरण का भाव।**
**समझो मन में हो रहा, प्रभु का आविर्भाव।।**
**जिसके भी मन में बसे, सद्गुण अरु सद्भाव।**
**वो निश्चिंत बना रहे, पार लगेगी नाव।।**

# बुरा वक्त, मैत्री की कसौटी

एक राजा को उसी राज्य के एक सज्जन व्यक्ति से मित्रता थी। दोनों एक दिन टलते हुए जंगल की तरफ निकल गये। राजा ने एक फल तौड़ उसके छः टूकडे किये।

एक टुक्ड़ा अपने मित्र को दिया। मित्र ने उसे खाकर और मांगा। राजा ने दे दिया। जब तीसरा मांगा तो राजा ने थोड़ा सकुचाते हुए वह भी दे दिया। मित्र ने जब शेष टुकड़े भी मांगे तो राजा ने मन मारकर उसे दो और टुकड़े दे दिये। मित्र ने वे टुकड़े भी बड़े चाव से खा गया। और छठे की मांग कर दी।

इस पर राजा मन ही मन क्रुद्ध हो गया कि कैसा मित्र है। पूरा फल स्वयं खाना चाहता है। तब राजा ने कहा यह टुकड़ा तो मैं ही खाऊँगा। तुम्हे

नहीं दूंगा। ऐसा कहने के उपरांत राजा ने वह टुकड़ा मुंह में डाला औश्र चाबते ही झट से थूं क दिया। क्योंकि वह बहुत ही कड़वा था। राजा ने कहा हे मित्र! तुमने कड़वे फल के पांच टुकडे बिना शिकायत ही खा लिये। मैं तो मन में यह सोच रहा था। कि फल बहुत मीठा होगा और तुम पूरा फल खाना चाह रहे हो परंतु जब मैने खाया तब पता चला कि तुम मुझे कड़वा फल नही खाने देना चाहते थे। फल के इस कड़वे स्वाद के कारण तुमने यह सब किया। तुमने यह क्यों नहीं बताया कि यह फल इतना कड़वा है। इस पर मित्र ने उतर दिया राजन् आपने मुझे कई बार मीठे फल खिलाए। एक बार अगर कड़वा फल आ गया तो मै कड़वा कहूँगा क्या? आपने मुझ पर अनगिनत उपकार किये है। अगर एक बार कष्ट आ गया तो क्या वह कष्ट मैं आपको बताऊँगा? राजा मित्र की बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और उसे गले लगा लिया। एक मित्र को दूसरे मित्र के सुख–दुःख में बराबर की भागीदार होना चाहिए। मित्रता भेदभाव नहीं करती है। सच्चा मित्र वहीं है जो कठिन से कठिन हालत में भी साथ खड़ा रहे।

**– कैलाश 'मानव'**

# ईश्वर प्रेम

**प्रेम पंथ पे पग धरै,**
**देत ना शीश डराय।**
**सपने मोह व्यापे नहीं,**
**ताको जनम नसाय।।**

किसी गाँव में एक सज्जन पुरुष रहते थे। वे कथा लेखन एवं वाचन करते थे एक दिन उनके घर पर उनका एक मित्र सपरिवार मिलने आया। दोनों में आत्मिक प्रेम था। कथावाचक मित्र एक दिन भगवान श्रीकृष्ण द्वारा गजेन्द्र को मगरमच्छ से बचाने की कथा का

वाचन कर रहे थे कि किस प्रकार गजेन्द्र नामक हाथी को मगरमच्छ ने पकड़ लिया और फिर कैसे भगवान श्रीकृष्ण गजेन्द्र की पुकार सुनकर तत्काल बिना अस्त्र–शस्त्र के उसे बचाने वहाँ पहुँच गए। जब यह घटना लेखक के मित्र ने सुनी, तो वे भगवान का उपहास करने लगे। कहने लगे स्नेह में ऐसा भी क्या बँधना कि भगवान बिना अस्त्र–शस्त्र लिए ही मगरमच्छ जैसे प्राणी से संघर्ष करने जा पहुँचे। यह तो चतुराई वाली बात नहीं आदि–आदि। लेखक, अपने मित्र द्वारा ईश्वर का उपहास शांत भाव से सुन रहे थे। दोपहर में भोजन के पश्चात् दोनों मित्र घर के बाहर बने कुँए के पास चहलकदमी कर रहे थे। जब लेखक के मित्र की पीठ कुँए की तरफ थी अर्थात् उनका मुँह कुँए के विपरीत दिशा में था, उसी समय लेखक ने एक बड़ा–सा पत्थर लिया और कुँए में डाल दिया। पत्थर गिरने की जोरदार आवाज हुई, तो मित्र ने पीछे मुड़कर देखा, उसी समय लेखक चिल्लाकर बोले –हे मित्र! तुम्हारा पुत्र कुँए में कूद गया। बचाओ! भागो! लेखक की पुकार सुनते ही उनका मित्र कुँए की तरफ भागा और अपने पुत्र को बचाने के लिए कुँए में कूदने लगा। उसी क्षण लेखक ने अपने मित्र की बाँह पकड़ ली और बोले –अरे भाई! कहाँ जा रहे हो?

मित्र ने जवाब दिया – कुँए में, पुत्र को बचाने। लेखक ने कहा–अरे व्यवस्था तो करके जाओ, कुछ रस्सी वगैरह ले लो, अगर ऐसे ही कूद जाओगे तो ऊपर कैसे आओगे और अपने पुत्र को बाहर कैसे निकालोगे?

मित्र ने कहा–अरे! पुत्र मोह में मैं यह सारी बात तो भूल ही गया।

इस पर लेखक ने कहा–जब तुम अपने पुत्र के प्यार में इतने पागल हो गए हो कि तुम्हें यह भी ध्यान नहीं कि तुम अन्दर जाकर बाहर कैसे आओगे, ठीक उसी प्रकार ईश्वर भी प्रेम के वशीभूत होकर अपने भक्त की रक्षा हेतु बिना कुछ लिए, बिना विलम्ब किए, तत्काल दौड़े चले आते हैं। भक्त के स्नेह में ईश्वर भी अपना आपा खो देते हैं।

**प्रेम पियाला सो पिये**
**शीश दक्षिना देय।**
**लोभी शीश न दे सके,**
**नाम प्रेम का लेय।।**

अर्थात् प्रेम वह वस्तु है, जो सदैव तत्परता दर्शाती है। प्रेम में धैर्य भी है, तत्परता भी है। प्रेम को निभाना आसान नहीं है। प्रेम वह रिश्ता है, जो जितना पुराना होता जाता है, उतना ही अधिक प्रगाढ़ होता जाता है। प्रेम में कभी स्वहित न साधें।

**–सेवक प्रशान्त भैया**

# एक सेवाभावी मानव की जीवनी

**( वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से )**

कैलाश के कुछ समझ में नहीं आया कि वह क्या करे। उसके मन में उस लड़के को देखने की भी उत्कण्ठा थी मगर डाक्टर साहब उसे इस स्त्री का जिम्मा दे गये थे, तभी कैलाश को एक युक्ति सूझी। उसने स्त्री को कहा–माताजी, आप मेरे साथ आइये, मैं एक चीज आपको बताता हूं। कैलाश का प्रस्ताव सुन स्त्री चुप हो गई, उसे शायद समझ में नही आ रहा था कि ये मुझे कहां ले जाना चाहते हैं, कैलाश ने फिर उससे कहा–उठो, चलो मेरे साथ। स्त्री किंकर्तव्यविमूढ सी उठ कर कैलाश के साथ चल पड़ी मगर कुछ कदम चलने के बाद शायद उसे याद आया तो वह वापस रोने लगी।

कैलाश उस वार्ड में गया जहां ऑपरेशन के बाद उस लड़के को रखा गया था, स्त्री भी रह रह कर रोती हुई उसके पीछे पीछे आई। एक पलंग पर वह लड़का सोया हुआ था। उसका पूरा शरीर चद्दर से ढका हुआ था। लड़का नींद के आगोश में था, उसके चेहरे की शांति देख कर कोई अनुमान तक नहीं लगा सकता था कि एक दिन पूर्व ही उसका इतना बड़ा ओपरेशन हुआ है।

कैलाश उसके पलंग के पास खड़ा हो गया और स्त्री से बोला–देखिये माताजी, इस लड़के को देखिये, कितनी शांति से सो रहा है जैसे इसके कुछ हुआ ही नहीं हो, यह कहते हुए कैलाश ने एकदम से उसकी चद्दर उघाड़ दी। अब हाथ पांव–कटा युवक पलंग पर नजर आ रहा था, उसे देखते ही स्त्री अपना रोना भूल अवाक रह गई और सुध आते ही पूछ बैठी इसे क्या हो गया ?

कैलाश को लगा जैसे उसका कार्य सिद्ध हो गया है, उसने विजयी मुस्कान के साथ कहा कि आपके पति को थोड़ी सी लगी है जिसमें आपने रो रो कर पूरे अस्पताल को सिर पर उठा लिया है मगर इस लड़के के तो हाथ–पांव काट लिये गये हैं फिर भी देखो किस शांति से सो रहा है। कैलाश ने वापस उसे चद्दर ओढ़ा दी और स्त्री को लेकर पुनः उसके वार्ड की तरफ आगे बढ़ा। स्त्री को जैसे झटका लग गया, रोना तो दूर उसके मुँह से एक शब्द तक नहीं निकल रहा था। कैलाश ने इस क्षण को उचित समझा, जैसे लोहा गर्म हो और हथौड़े की मार का समय हो गया हो उसी तरह कैलाश ने मार करते हुए कहा कि आप रोते रहोगे तो न तो आपके पति का और न ही अस्पताल के बाकी मरीजों का कोई भला हो पायेगा। स्त्री ने विश्वास के साथ कहा कि अब वह नहीं रोयेगी।

**अंश - 052**

# शहर-गांव भक्ति का प्रवाह

संस्थान के तत्वावधान में धर्म प्रेमी महानुभावों व परिवारों के सौजन्य से देश भर के विभिन्न शहर–गांवों में धर्म, संस्कृति व अध्यात्म की सरिता के प्रवाह के लिए जनवरी–फरवरी–22 में कथा ज्ञान–यज्ञ सानन्द सम्पन्न हुए।

**मथुरा**– वैरागी बाबा आश्रम, परिक्रमा मार्ग वृंदावन–मथुरा (उत्तरप्रदेश) में पूज्या अमृता शर्मा जी, हरिद्वार के सौजन्य से सप्त दिवसीय (8से 14 जनवरी) श्रीमद्भागवत कथा का पारायण, सानन्द सम्पन्न हुआ। जिसका सीधा प्रसारण देशभर में 'ईश्वर' चैनल से कथा समय सांय 4से 7 बजे तक हुआ। व्यास पीठ पर बिराजित पूज्य मधुर कृष्ण जी महाराज ने कहा कि श्रीमद्भागवत के श्रवण से जीवन की सारी दुविधाए और समस्याओं का समाधान मिलता है। संसार में प्रभु के अलावा सारे सम्बन्ध अस्थिर हैं। अतएव जीवन को सार्थक करने के लिए परमपिता का नित्य स्मरण करना चाहिए।

**हरिद्वार**– हरिपुर कलां, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) के राधाकृष्ण कृपा धाम में संस्थान के तत्वावधान में 30 जनवरी से 5 फरवरी तक सप्तदिवसीय श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन सानन्द सम्पन्न हुआ। जिसका आस्था चैनल से देशभर में सीधा प्रसारण हुआ। कथा व्यास पण्डित आयुशकृष्ण नयन जी महाराज ने कहा कि जो लोग नीतिपूर्वक जीवन निर्वाह करते हैं, उन पर प्रभु की कृपा रहती है। आज संसार में लोग विपरीत मार्ग पर चलकर प्रकृति को नष्ट करना चाहते हैं इसीलिए प्रकृति अनेक तरह से उनके संहार के लिए भी उद्यत है। उन्होंने श्रीमद्भागवत कथा के श्रवण का फल कल्पवृक्ष के फल के समान बताया। जिससे सारे कष्टों का निवारण होता है।

**दतिया**– स्वामी जी महाराज कॉलेज, दतिया (मध्यप्रदेश) में 25से 31 जनवरी तक सम्पन्न श्रीमद्भागवत कथा में व्यास पीठ से श्रद्धालुओं को कथावाचक पूज्य रमाकन्त जी महाराज ने कहा कि जीवात्मा सच्चिदानंदन परब्रम्ह परमात्मा का अंश है। जीवात्मा के मृत्यु के बाद भी भगवान से सम्बन्ध जुड़ा रहता है, जबकि दूसरे तमाम रिश्तें–नाते टूट जाते हैं। कथा व्यास का आयोजक प्रणव ढेंगुला परिवार ने अभिनन्दन किया व श्रीमद्भागवत जी की आरती उतारी। कथा का 'सत्संग' चैनल पर प्रतिदिन 1से 4 बजे तक सीधा प्रसारण हुआ।

**मथुरा**– श्रीराम गोविन्द मंदिर, श्रीब्रजसेवा धाम वृदांवन–मथुरा (उत्तरप्रदेश) में 16से 22 फरवरी तक कथाज्ञान यज्ञ के तहत श्रीमद्भागवत कथा का भक्तिमय विशाल आयोजन सानन्द सम्पन्न हुआ। जिसका आस्था चैनल पर प्रसारण से देशभर के धर्मप्रेमी महानुभावों ने लाभ लिया।

कथा व्यास पूज्य ब्रजनंदन जी महाराज ने कहा कि जिस दिन व्यक्ति अपनी भूल अथवा गलती को खुले मन से स्वीकार कर पश्चाताप के लिए तत्पर हो जाता है उसी वक्त वह ईश्वर की दृष्टि में दोष मुक्त हो जाता है। कथा श्रवण के लिए आस–पास क्षेत्रों के बड़ी संख्यां में श्रद्धालु स्त्री–पुरूष एकत्रित हुए।

# सिर्फ फैट ही नहीं प्रदूषण भी है मोटापे की वजह

वसा युक्त भोजन ही नहीं, बल्कि प्रदूषण से भी मोटापे का खतरा है। एक नए अध्ययन के मुताबिक वातावरण में मौजूद कुछ प्रदूषक तत्व मोटापा बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। वैसे व्यक्ति जिनके शरीर में स्थायी जैविक प्रदूषक (पीओपी) की मात्रा अधिक पाई गई, वे मोटापे से अधिक ग्रस्त थे और उनके शरीर में कोलेस्ट्रॉल व ट्राइग्लिसराइड की मात्रा भी अधिक मिली। ये कारक हृदय रोगों के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं पीओपी धीमे–धीमे शरीर के वसा ऊतकों में जमा होता जाता है। जटिल साँख्यिकीय पद्धतियों की मदद से वैज्ञानिकों ने इस बात की पुष्टि की है कि शरीर में जमा पीओपी का संबंध मोटापे तथा रक्त में कोलेस्ट्रॉल तथा ट्राइग्लिसराइड्स के स्तर से है।

## आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

**भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन**

2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

**960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार**

2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

**1200 नई शाखाएं**

2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

**120 कथाएं**

2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

**वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी**

2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

**नारायण सेवा केन्द्र**

आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

## विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

**26 देशों में पंजीयन**

वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

**6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ**

6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

**20 हजार दिव्यांगों को लाभ**

विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

# अनुभव अमृतम्

आपका परिचय मालूम नहीं था। आप कहाँ रहते हो? आपने लिखा था 22 पीएण्डटी कॉलोनी, मैं ढूँढ़ता हुआ सेक्टर 4 में आया। इस कार से 10 जगह रास्ता पूछा। उस समय 1988 में हिरण मगरी इतना विकसित नहीं हुआ था, फिर रास्ता बता दिया किसी ने, कहा कि कैलाश जी के पास जाना है, हम आगे चलते हैं, सूरजपोल से वो पहुँचाकर गये। प्रेम का धन्धा मत कीजिये, सामने कितना प्रेम दिया, हमने कितना प्रेम दिया? प्रेम का व्यापार मत कीजिये।

**रामहि केवल प्रेम पियारा।**
**जान लेहि जो जानन हारा।।**

जिसको जानना है उसको जान लें, प्रेम अद्वितीय है। प्रेम अंतर्मन में बैठता है:–

अन्तर्मन में सद्भावों की पावन गंगा जब बहती।

अन्दर तक प्रेम से नहला दीजिये, अंतर्मन को शांत करवा दीजिये। प्रत्येक कोशिकाओं को प्रत्येक श्वसन की नली की करोड़ों कोशिकाओं को, नहलाया तो निहाल हो जायेंगे। तभी कहेंगे गिरधर जी म्हाने चाकर राखो जी। कैलाश जी को चाकर भगवान ने बना दिया। पी.जी. जैन साहब उन्होंने कहा कि ये मेरा बेटा है– राजेश। कैलाश जी मेरे चार बेटे हैं, सबसे बड़ा उसका नाम सुरेश है, इससे छोटा प्रकाश है, मद्रास में रहता है, उसके तीसरे नम्बर का जो राजेश है। इससे सबसे छोटा मुकेश है। ये मेरे साले जी के लड़के हैं, महाराष्ट्र में रहते हैं।

अद्भुत प्रेम, अद्भुत प्रेम, बाबूजी हाथीपोल धर्मशाला में कमरा ले रखा है, मैं कहाँ आऊँ? आपके साथ शिविर में चलना है। मैंने कहा– बाबू जी, हाथीपोल चौराहे के पास में एक स्थान बता दिया कि आप वहाँ बिराजियेगा। साढ़े सात बजे बस आयेगी, उस समय वहाँ एक दो जने और भी बैठे हुए होंगे। बस वहाँ रूकेगी, आलोक विद्यालय की बस है, 30–35 जने होंगे, आपको भी बिठायेंगे, फिर हाथीपोल से चेतक सर्कल से होते हुए, फतेहपुरा होते हुए,साइफन चौराह होते हुए इसवाल के बाद गोगुंदा, के पास जसवन्तगढ़ है, वहाँ शिविर है–कल। बड़े प्रसन्न हुए, जीवन धन्य हो गया।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 405 (कैलाश 'मानव')

## अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

| Bank Name | Branch Address | RTGS/NEFT Code | Account |
|---|---|---|---|
| State Bank of India | H.M.Sector-4 | SBIN0011406 | 31505501196 |
| ICICI Bank | Madhuban | ICIC0000045 | 004501000829 |
| Punjab National Bank | KalajiGoraji | PUNB0297300 | 2973000100029801 |
| Union Bank of India | Udaipur Main | UBIN0531014 | 310102050000148 |

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023